गिर

भारत की गौरवशाली देशी गोवंशीय विरासत

प्रस्तावना

भारत की धरती पर गोवंश की अनेक विशिष्ट नस्लों ने सदियों से अपनी अलग पहचान बनाई है। उनके इतिहास, उत्पत्ति, स्वरूप, गुण और उपयोग का विवरण पुरानी पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों, सर्वेक्षणों तथा अन्य ऐतिहासिक स्रोतों में बिखरा हुआ है।

यह संकलन उसी प्रामाणिक ऐतिहासिक सामग्री को एक स्थान पर प्रस्तुत करने और हिंदी पाठकों के लिए सरल एवं सुगम बनाने का प्रयास है। इसमें भारतीय गोवंश के इतिहास, पहचान और विशेषताओं से संबंधित जानकारी को मूल स्रोतों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

यह संकलन किसी नस्ल का आधुनिक वैज्ञानिक मूल्यांकन नहीं, बल्कि ऐतिहासिक स्रोतों में दर्ज उसके स्वरूप, विशेषताओं और इतिहास को आज के पाठक तक पहुँचाने का एक विनम्र प्रयास है।

॥ मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः ॥

मूल स्रोत
पुस्तक: Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency
लेखक: K. Hewlett
प्रकाशन वर्ष: 1912

पुस्तक की ऑनलाइन PDF प्रति: | www.surbhisewa.com

अनुवाद संबंधी सूचना

यह हिंदी पाठक संस्करण कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की सहायता से तैयार किया गया है। किसी तथ्य अथवा अनुवाद में अंतर पाए जाने पर संबंधित मूल पुस्तक को ही अंतिम और प्रमाणिक स्रोत माना जाए।

गिर गोवंश

मूल स्रोत: के. हेवलेट, बॉम्बे प्रेसीडेंसी के भारतीय गोवंश, 1912

शुद्ध प्रकार, नाम और प्रजनन क्षेत्र

मूल लेखक गिर को उस प्रकार का शुद्ध रूप बताता है जिसे उस समय 'काठियावाड़ नस्ल' कहा जाता था। इसका प्रजनन पूरे काठियावाड़ में होता था, किंतु विशेष रूप से जूनागढ़ राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित गिर के जंगलों और पहाड़ियों में, जिनसे इसका नाम पड़ा।

काठियावाड़ के उत्तर-पूर्वी भागों में नस्ल अक्सर शुद्ध रूप में नहीं मिलती थी और वहाँ दूसरे प्रकारों के रक्त-मिश्रण के संकेत दिखाई देते थे। इन क्षेत्रों में गिर गायों को कांकरेज सांडों से मिलाना असामान्य नहीं था; उद्देश्य ऐसे पशु प्राप्त करना था जिनमें गिर की दुग्ध-क्षमता और कांकरेज की अच्छी कार्य-क्षमता दोनों मिलें।

गिर गोवंश बॉम्बे प्रेसीडेंसी के सभी भागों में भी काफी बार मिलता था और बॉम्बे में दुधारू गोवंश के रूप में बहुत पसंद किया जाता था। काठियावाड़ की विभिन्न रियासतों—जिनमें पालिताना, राजकोट, वांकानेर और सायला का उल्लेख है—द्वारा भी इसके झुंड रखे जाते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 9 | पीडीएफ पृ. 20.

मुख्य उपयोग और सामान्य आकार

गिर मुख्यतः दुग्ध-प्रधान नस्ल है। नर पशु सामान्य उपयोग के कामों में भी उपयोगी बताए गए हैं, यद्यपि कांकरेज या खिल्लारी की तुलना में वे कुछ धीमे और सुस्त माने गए हैं। आकार में गिर मध्यम से कुछ बड़ा है।

पशु	कुकुद के पीछे ऊँचाई	छाती का घेरा
अच्छा बैल (बैल)	50–53 इंच (लगभग 127.0–134.6 सेमी)	68–73 इंच (लगभग 172.7–185.4 सेमी)
अच्छा सांड	49–52 इंच (लगभग 124.5–132.1 सेमी)	69–74 इंच (लगभग 175.3–188.0 सेमी)
अच्छी गाय	46–50 इंच (लगभग 116.8–127.0 सेमी)	63–67 इंच (लगभग 160.0–170.2 सेमी)

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 9 | पीडीएफ पृ. 20.

रंग

गिर में अनेक रंग मिलते हैं। लेखक लाल, पीताभ-भूरा, भूरा, मैला-सफेद, चित्तीदार और रोअन को अधिक सामान्य रंगों में गिनता है। अच्छी नस्ल के गिर पशुओं में अलग-अलग रंगों के बड़े-बड़े चकत्ते नहीं मिलते।

कान, सिर का ऊपरी भाग, गर्दन, पैर और पूँछ के अंत का बालों का गुच्छा सामान्यतः गहरे रंग का होता है—प्रायः मटमैला लाल और कभी लगभग काला।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 9 | पीडीएफ पृ. 20.

सिर, माथा, सींग, आँखें और कान

अन्य भारतीय नस्लों की तरह गिर में भी सिर सबसे विशिष्ट लक्षण दिखाता है। माथा विशेष रूप से चौड़ा, गोल और उभरा हुआ है। सींगों का पीछे की ओर झुकना इस उभार को और स्पष्ट करता है। सांड में माथा बहुत अधिक विकसित होता है; गाय में भी वह उभरा रहता है, किंतु यह विशेषता सांड जितनी तीव्र नहीं होती।

सांड के सींग आधार पर छोटे और मोटे होते हैं। वे तेजी से पीछे की ओर मुड़ते हैं और फिर आगे की ओर झुकते हैं। गाय में सींग अपेक्षाकृत पतले और लंबे होते हैं तथा पीछे और भीतर की ओर झुकते हैं।

आँखें काली और उनींदी-सी दिखाई देती हैं। पलकें भारी होकर आँखों के ऊपर लटकती और उन्हें छाया देती हैं; मूल लेखक इस कारण आँखों के भाव को 'अविश्वसनीय-सा भाव' कहता है।

कान लंबे और लटकते हुए हैं और लेखक उनकी तुलना लटकते कान वाले खरगोश के कानों से करता है। कानों के सिरे भीतर की ओर झुकते हैं और सिरे के पास भीतर की ओर एक विशिष्ट कटाव रहता है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 9 | पीडीएफ पृ. 20.

गिर सांड (Gir Bull)

मूल सोत: K. Hewlett, Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency, 1912

(Plate V)

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

माप / Dimensions (इंच / inches)

ककुद के शीर्ष तक ऊँचाई Height—Top of hump	ककुद के पीछे ऊँचाई Height—Behind hump
58 इंच / inches	49 इंच / inches

नोट: यह छायाचित्र तथा माप लेफ्टिनेंट-कर्नल एफ. जोसलन (F. Joslen) द्वारा लिए गए थे।

मुख, गर्दन, कुकुद और गलकम्बल

सांड का चेहरा छोटा दिखाई देता है, किंतु लेखक स्पष्ट करता है कि इसका कारण माथे की अधिक चौड़ाई और उभार है; गाय में चेहरा लंबा दिखाई देता है। मुखाग्र बड़ा और काला है।

सांड की गर्दन छोटी और मोटी, जबकि गाय की गर्दन अधिक महीन होती है। सांड में कुकुद बहुत बड़ा और गाय में मध्यम आकार का होता है। गलकम्बल विकसित और लटकता हुआ है तथा जबड़े और गर्दन के आसपास काफी ढीली त्वचा रहती है।

सांड का लिंगावरण लटकता हुआ है और गायों के पेट पर लटकती त्वचा की तह सामान्य रूप से मिलती है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 10 | पीडीएफ पृ. 21.

छाती, पीठ, पैर और अयन

छाती अच्छी तरह विकसित और विशाल है। पीठ विकसित है और पिछला भाग ढलान लिए रहता है। पैर सीधे और शरीर पर अच्छी तरह स्थित हैं; घुटने और हॉक के नीचे अच्छी हड्डी दिखाई देती है। जाँघों में कई बार मांसपेशियों का विकास कम रहता है।

खुर बड़े हैं और उनमें फैलने की प्रवृत्ति है। गाय का अयन सामान्यतः उचित से मध्यम आकार का, किंतु कुछ लटकता हुआ होता है। स्तनाग्र बड़े होते हैं, पर उनका स्थान अक्सर समान या सममित नहीं होता।

लेखक गिर के समग्र रूप को बहुत विशिष्ट और एकरूप बताता है तथा नस्ल को अपने प्रकार के प्रति उल्लेखनीय रूप से स्थिर मानता है। सामान्यतः पशु भारी-भरकम दिखाई देते हैं, हालांकि कुछ पशुओं में लंबे पैरों वाली बनावट की प्रवृत्ति मिलती है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 10 | पीडीएफ पृ. 21.

प्रजनक समुदाय, झुंड और घूमंतू पालन

काठियावाड़ में गिर का प्रजनन मुख्यतः पेशेवर प्रजनकों—रबारी, भरवाड़ या चांभार—द्वारा किया जाता था। कृषक और दूसरे ग्रामीण भी कुछ सीमा तक इसका प्रजनन करते थे। काठियावाड़ की कुछ रियासतों के शासक भी इसके झुंड रखते थे।

काठियावाड़ के बाहर भी गिर पशु असामान्य नहीं थे, विशेषकर दूध व्यवसायियों के झुंडों में। अकालों से घटे पशुधन की पूर्ति के लिए बड़ी संख्या में गिर पशु दक्कन में लाए गए, किंतु लेखक के अनुसार दक्कन की परिस्थितियों में वे तेजी से अपने मूल गुण खो देते थे। दक्कन के कृषक इन्हें 'सुरती' नाम से जानते थे।

काठियावाड़ में पेशेवर प्रजनक व्यक्तिगत रूप से सामान्यतः 15–30 पशुओं के झुंड रखते थे; परिवार प्रायः अपने झुंड साथ रखते और चराने आदि का काम मिलकर करते थे। दक्षिणी काठियावाड़ के प्रजनक काफी हद तक घूमंतू जीवन जीते थे और चराई समाप्त होने पर पशुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाते थे।

वयस्क पशुओं को कभी घर या स्थायी आश्रय में नहीं रखा जाता था, किंतु दूध पीते बछड़ों को खराब मौसम में झोपड़ियों में रखा जाता था। सावधानीपूर्वक जोड़ी बनाकर प्रजनन हमेशा नहीं कराया जाता था, फिर भी लेखक के अनुसार ये प्रजनक गुजरात के प्रजनकों की तरह पशु-प्रजनन के व्यापक सिद्धांत समझते थे। प्रजनन-सांड सामान्यतः शुद्ध रक्त और अच्छी दुग्ध-वंश से चुना जाता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 10 | पीडीएफ पृ. 21.

नर पशुओं की कार्य-क्षमता

नस्ल मुख्यतः दुग्ध-क्षमता के लिए प्रसिद्ध है, किंतु नर पशु सामान्य सड़क और खेत के काम में भी उपयोगी हैं। वे धीमे हैं और भारी खिंचाई के काम के लिए अधिक उपयुक्त बताए गए हैं।

इनके खुर नरम होते हैं; इसलिए यदि कठोर जमीन या सड़कों पर काम लेना हो तो सावधानी से नाल लगाना आवश्यक बताया गया है। वृद्ध पशु काम में बहुत धीमे और सुस्त हो जाते हैं और लेखक के अनुसार उन्हें लगातार हाँकने और दंड देने की आवश्यकता पड़ती थी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 10 | पीडीएफ पृ. 21.

गिर गाय (Gir Cow)

मूल सोत: K. Hewlett, Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency, 1912

(Plate VI)

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

माप / Dimensions (इंच / inches)

ककुद के शीर्ष तक ऊँचाई Height—Top of hump 58 इंच / inches	ककुद के पीछे ऊँचाई Height—Behind hump 48 इंच / inches	शरीर की लंबाई Length of body 52½ इंच / inches	शरीर का घेरा Girth 68½ इंच / inches	अगले पैर का घेरा Shank girth 6½ इंच / inches
निचले पैर की लंबाई Length of shank 6½ इंच / inches	सींग की लंबाई Length of horn 11½ इंच / inches	चेहरे की लंबाई Length of face 28 इंच / inches	माथे की चौड़ाई Breadth of forehead 12 इंच / inches	कान की लंबाई Length of ear 12 इंच / inches

नोट: यह छायाचित्र तथा माप लेफ्टिनेंट-कर्नल एफ. जोसलन (F. Joslen) द्वारा लिए गए थे।

दुग्ध-क्षमता

काठियावाड़ में अच्छी गिर गायें पूर्ण दुग्धावस्था में प्रतिदिन 20–24 पाउंड (लगभग 9.1–10.9 किलोग्राम, भार के रूप में) दूध देती थीं। सामान्यतः वे 8–10 महीने तक दूध देती थीं, किंतु कुछ गायों के बारे में 18 महीने तक दूध देने की बात कही गई है।
लेखक यह भी लिखता है कि अपने मूल क्षेत्र से बाहर ले जाने पर उनकी दुग्ध-क्षमता कुछ घटती हुई दिखाई देती थी।
स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 11 | पीडीएफ पृ. 24.

दुहाई की पद्धति और बछड़े की भूमिका

गायों को सुबह और शाम दुहा जाता था। दुहते समय लात मारने से रोकने के लिए पिछले दोनों पैरों को हॉक के ऊपर बाँधना सामान्य प्रथा थी, किंतु दुहाई के समय पूरी गाय को बाँधना असामान्य बताया गया है। दूध उतरवाने के लिए बछड़े को गाय के साथ रखा जाता था।
स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 11 | पीडीएफ पृ. 24.

प्रजनन-अंतराल और ऋतु में आना

सामान्य परिस्थितियों में गाय लगभग 2 वर्ष में एक बार बछड़ा देती थी, किंतु अधिक अच्छा आहार और अधिक घरेलू पालन मिलने पर लगभग 12 महीने में एक बार भी बछड़ा दे सकती थी।
सामान्यतः बछड़ा छुड़ाने से पहले गाय फिर ऋतु में नहीं आती थी; अधिक घरेलू पालन की अवस्था में बछड़ा देने के लगभग 3 महीने के भीतर ऋतु में आने का उल्लेख है। बछिया पहली बार 3–4 वर्ष की आयु के बीच ऋतु में आती थी, किंतु कभी-कभी 5 वर्ष की आयु तक भी नहीं आती थी।
स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 11 | पीडीएफ पृ. 24.

चराई और अतिरिक्त चारा

गिर गोवंश सामान्यतः भोजन के लिए चराई पर निर्भर रहता था। घास काटकर चारे के रूप में जमा करना सामान्य प्रथा नहीं थी। गिर के जंगलों की चराई उत्कृष्ट बताई गई है और वर्ष के अधिकांश समय पर्याप्त रहती थी। जहाँ चराई कम होती थी, वहाँ उपलब्ध चराई की पूर्ति के लिए थोड़ी मात्रा में कड़बी दी जाती थी।
स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 11 | पीडीएफ पृ. 24.

1912 में दर्ज कीमतें

लेखक लिखता है कि अच्छे दर्जे के अन्य भारतीय पशुओं की तरह गिर पशुओं के भाव भी हाल के वर्षों में बढ़े थे।

पशु / श्रेणी	मूल रिपोर्ट में दर्ज कीमत
अच्छी श्रेणी का सांड	₹150–₹175
अच्छी कामकाजी बैलों की जोड़ी — काठियावाड़	₹100–₹175 प्रति जोड़ी
वास्तव में अच्छी जोड़ी — दक्कन	लगभग ₹200
3 वर्ष का, अभी न साधा गया बैल	₹40–₹50 प्रति पशु
2 वर्ष का बैल	₹30–₹40 प्रति पशु
1 वर्ष का बैल	₹15–₹20 प्रति पशु
पूर्ण दुग्धावस्था में 6–7 सेर/दिन देने वाली गाय	₹40–₹50
12 सेर या अधिक/दिन और अच्छी दुग्ध-वंश वाली गाय	₹100 या अधिक
उसी श्रेणी की गाय — बॉम्बे	उपरोक्त कीमत से लगभग ₹30 अधिक

गायों की कीमत उनके दूध उत्पादन के अनुसार निर्धारित होती थी। पूर्ण दुग्धावस्था में 6–7 सेर प्रतिदिन देने वाली गाय के लिए ₹40–₹50 उचित कीमत बताई गई है। 12 सेर या उससे अधिक प्रतिदिन देने वाली, अच्छी दुग्ध-वंश की गाय के लिए ₹100 या उससे अधिक को असामान्य रूप से ऊँची कीमत नहीं माना गया। बॉम्बे में उसी श्रेणी की गायें इन कीमतों से लगभग ₹30 अधिक मूल्य की बताई गई हैं।
स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 11 | पीडीएफ पृ. 24.

गिर बैल (Gir Bullock)

मूल सोत: K. Hewlett, Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency, 1912

(Plate VII)

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

माप / Dimensions (इंच / inches)

ककुद के शीर्ष तक ऊँचाई Height—Top of hump	ककुद के पीछे ऊँचाई Height—Behind hump	शरीर की लंबाई Length of body	शरीर का घेरा Girth	अगले पैर का घेरा Shank girth
68½ इंच / inches	58 इंच / inches	55 इंच / inches	78 इंच / inches	7½ इंच / inches

निचले पैर की लंबाई Length of shank	सींग की लंबाई Length of horn	चेहरे की लंबाई Length of face	माथे की चौड़ाई Breadth of forehead	कान की लंबाई Length of ear
6½ इंच / inches	29 इंच / inches	24 इंच / inches	10 इंच / inches	18 इंच / inches

नोट: यह छायाचित्र तथा माप लेफ्टिनेंट-कर्नल एफ. जोसलन (F. Joslen) द्वारा लिए गए थे।

माँ है, शब्दों से नहीं,
आँखों से बोलती है।
इसके सीने पर अपना कान लगाओ तो सही।
हर धड़कन में दुलार है,
कुछ देर तुम भी इससे बतलाओ तो सही।
तुम्हारे हर दर्द को अपने में समेट लेगी,
बस माँ कहकर इससे लिपट जाओ तो सही।
गौ माता राष्ट्रमाता
सेवा करें
संरक्षण करें
संवर्धन करें
www.surbhisewa.com